ये मुद्दा जो परीक्षित ने उठाया है उसे अधिक गहराई से निपटने की जरूरत है। यह वह जगह है जहां अधिकांश भौतिकवादी व्यक्ति गलती करते हैं और भौतिकवादी इच्छाओं को भगवान पर लाद देते हैं। भगवान यदि हमारे जैसा ही हो तो उसे पाने की जरूरत ही क्या है? फिर तो भगवान वैसा ही होगा जैसे हमारे माँ, बहन, भाई, स्त्री, पति है। उनका अनुभव तो हमारे पास विद्यमान है। उसके लिए भगवत्प्राप्ती आदि के परिश्रम करने की क्या आवश्यकता है? जो लोग भगवान पर काम, क्रोध जैसे मानवी दोषारोपण करते है वो भगवान किसे कहते है जानते ही नही। भगवान का मतलब ही है की वो इन सब दोषों से रहित है। भगवान के स्मरण करने मात्र से जीव इन दोषों से परे हो जाता है तो स्वयं भगवान में मायिक दोषों की कल्पना करना नितांत पागलपन है।

हम जानते हैं कि जब पुलिस अपराधी को मार देती है, तो उसे पुरस्कृत किया जाता है। लेकिन जब कोई गुनाहगार अन्य व्यक्ति को मारता है, तो उसे फांसी हो जाती है। हत्या की क्रिया समान है लेकिन मकसद और क्रिया के परिणामों में महद अंतर है। एक अन्य लोगों के लाभ के लिए है एक है जबकि दूसरी स्वार्थी मकसद के साथ है। इस प्रकार अपराध शारीरिक क्रिया नहीं है। अपराध मकसद या मनीषा होती है।

एक कुशल सर्जन रोगी को ठीक करने के लिए पेट में चाकू डालता है। उसका मकसद रोगी को राहत देना है। यदि आपराधी दावा करता है कि उसने पीड़ित के पेट में चाकू को भोंक दिया है इसलिए उसकी कार्रवाई को सर्जन के बराबर माना जाना चाहिए और इसलिए उन्हें क्षमा ही कयूं बल्कि पुरस्कार मिलना चाहिए तो अदालत मकसद की ओर निर्देश करते हुए सजा फर्माती है।

डॉक्टर मरीज की बीमारी ठीक करने के लिए उचित मात्रा में जहर को दवाई के रूप में प्रशासित कर सकता हैं लेकिन

हत्यारा, जो दूसरों को जहर दे कर मारता है, समान क्रिया के आधार पर सजा से बच नहीं सकता।

भगवान और संत के सभी कार्यों को अनिवार्य रूप से आत्मा के लाभ के लिए हैं। कारण? उनके पास कुछ हासिल करने के लिए कुछ शेष नहीं है क्योंकि भगवान तो खुशी का ही दूसरा नाम है। मतलब भगवान ही वो अनंत मात्रा का सुख है जो हर किसी की मांग है। संत वह व्यक्ति होते हैं जिन्होंने इस खुशी को हासिल किया है। दूसरे शब्दों में उनके उनके साथ भगवान है। वास्तव में, उन्हें अन्य आत्माओं की समस्याओं को देखने के लिए इस खुशी को दबाना पड़ता है। वे सर्जन की तरह हैं जो दूसरों के दिमाग की स्थिति देखते हैं और संबंधित व्यक्ति के दिमाग को शुद्ध करने के लिए उचित कार्रवाई करते हैं। इस प्रकार उनके सभी कार्य दूसरों को खुश करने की इच्छा से प्रेरित होते हैं। इसके अलावा, क्योंकि उनके पास ईश्वर की दिव्य शक्ति के माध्यम से प्राप्त एकदम सही ज्ञान है, उनके काम में कोई गलती नहीं हो सकती है। वे कभी गलत नहीं हो सकते।